इसके पश्चात् लोक सभा मध्याह्न भोजन के लिए दो बज कर पन्द्रह मिनट तक के लिए स्थगित हो गयी

लोक सभा मध्याह्न भोजन के बाद दो बजकर चौदह मिनट पर (म०प०) पर पुनःसमवेत हुई।

(अध्यक्ष महोदय पीठासीन हुए)

अध्यक्ष महोदय: इससे पहले कि मैं प्रधान मन्त्री जी से बोलने के लिए कहूं मैं सदन को यह बता देना चाहता हूं कि चूंकि विदेश मन्त्री राज्य सभा में में हैं तथा वे स्वयं ही वक्तव्य देना चाहेंगे तो कौमार्य परीक्षण से सम्बन्धित ध्यानाकर्ष प्रस्ताव कल तक के लिए स्थगित रहेगा।

मंत्री का परिचय

प्रधान मंत्री (श्री मोरारजी देशाई): अध्यक्ष महोदय, इससे पहले कि श्री लंका की हाल की अपनी यात्रा के बारे में, मैं वक्तव्य दूं, अपने सहयोगी स्वास्थ्य तथा परिवार-कल्याण मन्त्री, श्री रविराय से आपका तथा, आपके द्वारा सदन का, परिचय कराते हुए मुझे अतीत प्रसन्नता हो रही है।

श्री लंका की यात्रा के बारे में प्रधान मंत्री की वक्तव्य

प्रधान मंत्री (श्री मोरारजी देशाई) : श्रीलंका के राष्ट्रपति के निमंत्रण पर मैंने 3 फरवरी तक श्री लंका जनवादी समाजवादी गणराज्य का दौरा किया। श्री लंका के राष्ट्रपति ने कैंडी में 4 फरवरी को अपने राष्ट्रीय दिवस समारोहों में भी मुझे मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया था। श्री समरेन्द्र कुन्डू, विदेश राज्य मंत्री मेरे साथ गये थे।

दौरे के अन्त में जो संयुक्त प्रैस विज्ञाप्ति जारी की गई थी उसकी प्रति सभा-पटल पर रख दी गई है।

[ग्रन्थालय में रखी गई/देखिये संख्या एल. टी. 3251/79]

इस दौरे के दौरान मुझे श्री लंका के राष्ट्रपति, प्रधान मंत्री तथा वहां की सरकार के अन्य मंत्रीयों से द्विपक्षीय हितों के बहुत से विषयों पर बातचीत करने तथा प्रादेशिक और अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं पर विचारों का आदान-प्रदान करने के कई मौके मिले। मुझे खुशी है कि हम इस बात से सहमत हुये कि भारत और श्री लंका के बीच कोई ऐसी द्विपक्षीय समस्या नहीं रह गयी है जिसे हल किया जाना हो। दोनों देशों के बीच सांस्कृतिक और वैज्ञानिक संबंधों के साथ-साथ सभी क्षेत्रों में खासकर व्यापार और आर्थिक आदान-प्रदान के क्षेत्रों में भी आपसी सहयोग बढ़ाने के तौर तरीकों के बारे में मुख्य रूप से हमारी बातचीत हुई।

कैंडी तथा कोलम्बों दोनों जगहों पर मैं भारतीय समुदायों के सदस्यों तथा विविध भारत-श्रीलंका संस्थाओं के नुमाइन्दों से मिला। यह संतोष की बात है कि वे सिर्फ आपसी सम्बंधों को और करीब लाने के लिए ही नहीं बल्कि श्रीलंका के विकास के लिए भी महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रहे हैं। स्वदेश लौटाये जाने वाले कुछ लोगों की समस्याओं के बारे में बातचीत करने का मुझे मौका मिला था। हमारे मिशनों को उनकी समस्याओं को पहले से ही जानकारी है तथा स्वदेश लाटाये जाने के लिए अपेक्षित औपचारिकताओं को सहज बनाने के लिए मैंने उन्हें

निर्देश दिये हैं । मैंने श्रीलंका के नेताओं के साथ भारत-श्रीलंका करार 1964 के कार्यान्वयन की समीक्षा की । दोनों पक्षों के अधिकारियों से इस संबंध में विविध कार्यविधियों को सरल और कारगर बनाने तथा उसमें सुधार करने के लिए कहा गया है । विपक्ष के नेता के साथ भी मेरी बातचीत बहुत उपयोग रही ।

'कोटमाले मल्टीपरपज़ रिज़र्वायर प्रोजेक्ट', जो प्रतिष्ठित महावली विकास योजना का एक भाग है, उसके उद्घाटन समारोह में भी मैंने भाग लिया । इस योजना से श्रीलंका में कृषि तथा बिजली उत्पादन से काफी वृद्धि होगी तथा श्रीलंका कि अर्थव्यवस्था के विकास की इसमें अच्छी सम्भावनायें हैं । इसमें शक नहीं की माननीय सदस्यगण इस बात से वाकिफ हैं कि इस परियोजना के लिए व्यावहारिक अध्ययन करने का खर्चा भारत सरकार ने दिया था और इसे एक इण्डियन कम्पनी वाटर एण्ड पावर डेवेलपमेंट कनसल्टेण्ट्स लि० ने तैयार किया था । भारत के पास ज्यादा भौतिक साधन नहीं हैं; फिर भी हम अपने मित्रों व पड़ोसियों को उनके राष्ट्रीय विकास में मदद करते हैं और मैं इस अवसर पर यह पुन: दोहराना चाहता हूं कि उनके विकास में मदद करने के लिए अपने साधनों के अन्तर्गत जितना बन पड़ेगा हम करेंगे ऐसा हमारा दृढ़ निश्चय है ।

अपनी यात्रा के दौरान, श्रीलंका के संसद् सदस्यों के सम्मुख भाषण देने का मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ । इन दोनों देशों की प्रजातांत्रिक पद्धति में आस्था और विकासशील देशों में इसकी प्रासंगिकता का पुन: समर्थन करने में मेरी इस महान संख्या के साथियों के साथ सहमती रही ।

महोदय, अपनी इस यात्रा की जो मुख्य छाप मैं अपने साथ लाया हूं वह है श्रीलंका की सरकार व लोगों में भारत के प्रति अत्यधिक आत्मीयता व प्रेम जो मैंने स्वयं महसूस किया और बदले में प्रकट किया । यह स्वाभाविक ही है कि भारत और श्रीलंका आपसी मित्रता के इस बंधन को और मज़बूत बनायें और अपने दोनों देशों के हित के लिए और नज़दीकी आर्थिक व भौतिक सहवार की दिशा में प्रयत्न करें । लेकिन इन सबसे प्रमुख बात यह है कि हम प्रजातांत्रिक जीवन पद्धति में आस्था रखते हैं और समान आध्यात्मिक मूल्यों और नैतिकता में विश्वास करते हैं ।

अंत में मैं राष्ट्रपति श्री जयवर्दन और प्रधान मंत्री श्री प्रेमदास जी के प्रति हार्दिक आभार प्रकट करे बिना नहीं रह सकता जिन्होंने इतनी आत्मीयता व सौहार्द से मेरा स्वागत किया तथा मेरे और मेरी पार्टी के प्रति इस यात्रा के दौरान अन्य कई तरीकों से निजी स्नेह दिखाया ।

सभा पटल पर रखे गये पत्र

लोक सभा के छठे सामान्य निर्वाचन तथा केरल विधान सभा के सामान्य निर्वाचन 1977 संबंधी प्रतिवेदन—खण्ड—I; द्विवर्षिक निर्वाचन पुस्तिका—एक विश्लेषण—राज्य सभा और विधान परिषदें (1974-75); कम्पनी अधिनियम के अन्तर्गत अधिसूचनायें; संसदीय तथा विधान सभाई निर्वाचन क्षेत्र आदेश में कतिपय संशोधन करने वाली अधिसूचनायें; तथा एकाधिकार के तथा निर्बन्धनकारी व्यापारिक व्यवहार अधिनियम के अन्तर्गत अधिसूचनायें ।